Bodleian Libraries
UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries
and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

13.B.10. Hindi Kash 1

Indian Institute, Oxford.

The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

~~Bhartṛihari gītā~~.

Bharťari-gīt

Bharthari geet

भरतरीगीत

بھرتری گیت

काशिनाथ कृत

जिस्में

महाराजा भरतरी ने मृगी के शापानुकूल
श्री परमहंस गोरखनाथ जी से उपदेशपाय
अनेक प्रकार के ज्ञान वैराग्य को प्राप्त
होय निज राज्य परित्यागकर संन्यास
धारण किया
और अमर पद पाय स्वेच्छा रमण करते हैं
वर्णित है

दूसरीबार स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छापा गया
फ़रवरी सन् १८८४ई॰

श्रीगणेशायनमः॥

अथ भरतरीगीत

दोहा

दून्द के नाती भये पुत्र गंधर्व सेन। भाई विक्रमाजीत के मैना वंती भैन॥ चौपाई॥ जा दिन जन्मे हैं राजा भरतरी बाजे हैं तबल निशान। हरे हरे गोबर मँगाय के आँगना वेदी लिपाय॥ मोतियन चौक पुराय के कंचन कलश धराय। सुघर सहेली बुलाय के गावैं मंगल चार॥ काशी से पंडित बुलावती चंदन चौकी बिछाय। ब्रह्मा बाँचन वेद को मुल्ला हरफ़ किताब॥ नाम तो निकला है भरतरी करम लिखा है बाला योग। बारों जारों तेरे वेद को पुत्रे दोष लगाय॥ कंचन देवोंगी दक्षिणा लौटि धरो दूसका नाम। उलटि पलटि ब्रह्मा देखता क्या रचो करतार लिखने वाला सोई लिख गया को है मेटन हार। कागज़ होय रानी बाँचिये करम न बाँचो जाय॥ ब्रह्मा ज़िकर क्या करि दिया बालक बुद्धि सिवाय। एक वर्ष के भरतरी दूजो तीजो जो लागि॥ चार वर्ष

के भरतरी माता तजे हैं परान। पाँच बर्ष के भरतरी कपड़ा पहिरे शिंगार॥ छठे बर्ष के भरतरी वेद पढ़ने को जाँय। सात बर्ष के भरतरी पढ़ लौं चट सार। नवें बर्ष के भरतरी ब्याही अनूप दे नारि। दश में बर्ष के भरतरी ब्याही चम्पा दे नारि॥ ग्यारह वर्ष के भरतरी ब्याही पिंगल दे नारि। बारह बर्ष के भरतरी ब्याही श्याम दे नारि॥ तेरह बर्ष के लागते बाँधी तीर कमान। एक दिन बोली श्याम दे सुनो राजा महाराज। कभी न आये रंग महल में कभी न खेले शिकार। इतनी राजा भरतरी सुनि खवास की बात॥ जल्दी से घोड़ा शिंगार के लाओ नौ टंकी कमान। कपड़े मंगाये भंडार से पहिरें राज कुमार॥ पाँचों पहरे राजा कापड़े पाँचों बाँधे हथियार। चुनि चुनि बाँधे राजा पागड़ी बावन खिड़की खवाय॥ खिरकी खिरकी राजा नग धरे दिवले दिये हैं जलाय। ऐसा राजा है भरतरी मानों इन्द्र अखाड़े को जाय॥ कुल में अमर राजा भरतरी चढ़ि घोड़ा लल कारते बारे दूनी उजार। बारे से दूनी उजार में घेरी मृगों की डार॥ बोलै मृगी सिंहल द्वीप को सुनो राजा महाराज। जो तुम भूखे शिकार के मारो मृगी दो चार॥ काला मृग मति मारिये तिया हो जायगी राँड। बोले ते दिन राजा

भरतरी सुन मृगी मेरी बात ॥ नाती हैं राजा इन्द्र के। पिता गंधर्ब सेन। भाई विक्रमाजीत के मैनावंती के बीर ॥ हम तो बेटे रजपूत के त्रिया पैड़ा मेरे न हाथ। मारैं तेरे काले मिरग को भखरा करेंगे बनाय ॥ काहे को कलपै त्रिया बावली जी। बोलीमृगी सिंहल दीप की सुनो मृगा मेरी बात ॥ भागा जाय तो कंता भागियो शिर पर नाचा है काल। भागे से मृगी ना बने जो कुछ लिखा कर्तार ॥ जोरे हुक्म भगवान का हम पर गेरेंगे हाथ। नहीं हुक्म भगवान का लौट महल को जायँ ॥ बीन बजाई राजा भरतरी मृगा लीनों है मोहि। फुदकि फुदकि मृगा चालता राजा खेलै शिकार ॥ पहली गांसी राजा फेंकता मृगा गये हैं बचाय। दूजी गांसी राजा फेंकता ले गया सींगों की आड़ ॥ तीजी गांसी राजा फेंकता झेला सुर मुख वार। धम्म देसे मृगा गिर गया पड़े ही करता जवाब ॥ खुरी देना मेरी गाय को घर घर लेगी पुजाय। नैना देना चातुर नारि को जग को देखेगी सिहाय ॥ सींग तो देना काहू क्षत्री को मार मोलेंगे बनाय। मृग छाला देना काहू तपसी को बन में लेगा बिछाय ॥ कलि में अमर राजा भरतरी जी ॥ दोहा ॥ राजा सात खंड ते हम चले रहें सिंहल

द्वीप। एक बीन के कारने प्रीश कीन बरवशीस॥ श्रो-
की लागी शरथी गहेरा लागो घाव। जब तक जीव
कण्ठ में तब लग बीन बजाव॥ चौपाई॥ हंस उड़ावे
कुण्ठ को काया गई कुम्हलाय॥ बोली मृगी सिंहल-
द्वीप की सुनो राजा महराज॥ जैसे कलपत देखो हु-
म फिरै वैसे कलपै तेरी नारि। तीन दिना तेरे राज
के पीछे साधोगे योग॥ मार मृगा राजा ले आये
जंगल के बीच सिद्धि मिले गोरखनाथ जो पहुंचे यो-
गी के पास। चरण छुये बाबा नाथ के गोरख करते
जवाब मेरे चरण बच्चा मत छुओ मुझ को लग ग-
या दोष॥ ये हैं उजार के तापसी नाहक डारे तैं मारि
एक मृगी को मृगा को सब न करिये रांड। बुरा किया
राजा भरतरी जी॥ बोले राजा ने दिन भरतरी सुनो
बाबा गोरखनाथ। जो अजमत के फ़क़ीर हो मृगा
देना जिलाय॥ याद किया भगवान को राखो भेष
की लाज। मारी है चुट की भभूत की मृगा उठि भये
ठाढ़ फुदकि २ मृगा नाचता पहुंचा मृगी के पास॥
बोली मृगी सिंहल द्वीप की सुनो बाबा गोरखना-
थ। युग युग जीवै बाबा गोरखजी फिरि के फेरा
सुहाग॥ कल में अमर राजा भरतरी जी॥ ज्ञान गुरू
का लग गया हृदय गया है समाय। बोले राजा ने

दिन भरतरी सुन गुरु गोरख नाथ।। चेला बनाले बाबा आपना सेवा करेंगे बनाय। बोला बाबा गोरखनाथ जी सुन बच्चा मेरी बात।। तुम को चेला बच्चा ना करें तुम हो राज कुमार। तुम्हरे महल में रानियाँ हम पर पड़ेगा श्राप।। पान फूल के भोगिया न सधे तुम सों योग। बोले राजा ते दिन भरतरी सुनो बाबा मेरी बात।। हम को चेला बाबा बेगि करो नहीं तुम को देंगे श्राप। मन में सोचे बाबा गोरखनाथ जी मन हीं करते बिचार।। जो तेरी मनसा है योग की मानो बचन हमार। महलों से भिक्षा ले आइयो ब्याही से बोलो माय।। पुत्र कहे भिक्षा डार दे योग अमर हो जाय। कलि में।। वचन सुनत राजा भरतरी मन में करते बिचार। अंग का जामा राजा फाड़ के गले की गुद्‌ड़ी बनाय।। शिर का चीरा राजा फाड़ के शिर की सेली बनाय। कानों के मोती उतार के ब्राह्मण को दिये डारि।। सोने के कुण्डल उतार के दिये ख़वास के हाथ। हाथ खप्पर काँधे फावड़ी मुख से भसम रमाय।। आगे बरन योगी बन चले गुरु को शीश नवाय। बन से चले राजा भरतरी आये नगरी के माँहिं।। खिड़की से अलख जगावते भिक्षा लाओ भोली माय।

शब्द सुनत रानी श्याम दे चंपा बाँदी बुलाय ॥
थार भरे मोती लावती सुरव दुशाला धराय ।
भिक्षा दे आवो बांदी योगी को नहीं धर्म घटजाय
भिक्षा देने बाँदी आवती मन में करती बिचार। मो-
तियों का थाल बाँदी घर धरे लाई चनो से भराय॥
भिक्षा ले जावो योगी आसने महलों में शोर मचा-
य । बाँदी के हाथ भिक्षा ना लेता सन्मुख देगी भो-
ली माय॥ मेंही रानी मैं ही रौतानी मैंही महलोंकी
माय। सोना पहिरें योगी औ रूपा बाँदी कैसे ब-
नाय ॥गुस्सा भरे बाँदी आपने लाई बाँस उठाय।
योगी को मारने आई जी ॥ बोले राजा ते दिन भर-
तरी सुन बाँदी मेरी बात।एक दिनातो वोहना तुमको
मोल खरीदा योग लिये क्या मारती ॥ तले ऊपर
बाँदी देखती मन में करती बिचार।पाँय पद्म माथे
सोंचन्द्रमा सो है अंग भभूत ॥ देखी सूरत आपने
राजा की बाँदी उलटी खाई पछाड़ । रोती पीटती
बाँदी आवती रानी से करती जवाब ॥ योगी के दर-
शन कीजिये ठाढ़े राज कुमार । माई माई खड़े कहैं
सो है अंग भभूत ॥ बोली रानी ते दिन श्याम दे
सुन बाँदी मेरी बात । मारूंगी बाँदी तुझे डारूंगी
कोठे में दूंगी चुनाय ॥ हदि क्यों न जाय बाँदी बावरी

राजा दोष लगाय । कलि में अमर राजा भरतरी जी॥ रोवै पीटे बाँदी शिर धुने उलटी खाई पछाड़ । देखे रानी बाँदी रोती मन में करती बिचार ॥ न्हायधोय कपड़ा पहनती सोलह करती शिंगार। थाल भरे मोती लावती अंचल भर हीरा लाल ॥ जरी के परदे छोड दिये आई उठिके द्वार। भिक्षा ले जाओ रमते योगिया राजा देता अशीष। बोले राजा ते दिन भरतरी सुन रानी मेरी बात। जेठ श्वशुर परदा करो योगी से परदा नाहिं॥ मोती मूंगा को मैं क्या करूं क्या करता हीरा लाल। शब्द लगा योगी हो चला भिक्षा लायो भोली माय ॥ पुत्र कहो॥ कलि०॥ परदा उठाय रानी देखती ठाढे राज कुमार। देखी सूरत अपने राजा की उलटी खाई पछाड़ ॥ थार पटक रानी शिर धुने मन में करती बिचार। पटुका पकड़ समुझावती सुन ले राज कुमार ॥ तेरा भला कैसे होयगा कहता ब्याही से माय। सिद्री भये कै तुम बावले कै तुम खाई है भांग ॥ कौन से माय की हम रानियां कैसे कहते हो माय। ओछी बातें राजा मत करो तुम हो राज कुमार ॥ समझो क्यों ना मेरे साइयां जी। बोले राजा ते दिन भरतरी सुन रानी मेरी बात ॥ राज धर्म की तो रानियां

योग फ़क़ीरी माय। चेरिन की पर बाँदियाँ ओऊ लगें मेरि माय ॥ समझो क्यों ना रानी श्याम दे जी। उस दिन सय्याँ योगी ना भये जौलों थी बाबुल द्वार॥ काहे को गये बाबुल द्वार में क्यों भला कीन्हा ब्याह। क्वारी रहती सैयां वर मिलता ब्याहे लग गया दोष॥ समझो क्यों ना मेरे साइयां जी। ओछे ओछे रानी मत कहे सुन ओछों की अरदास॥ बालक थे तब ब्याह हुआ लाये धोरवे में ब्याह। तेरा मेरा संयोग था जोड़ी रची कर्तार॥ हमरे करम में योग लिखा राज लिखा तेरा नाहिं। पुन कहे भिक्षा डार दे योग अमर हो जाय॥ कल में अमर राजा भरतरी जी। बोली रानी ने दिन श्याम दे सुन राजा महा राज॥ जो तेरी मनसा योग की धराहि योग तप लेउ। गंगा मँगा दूं हरि द्वार ते बैठे तीरथ नहाउ। मढ़िया बनवादूं चम्पा बाग़ में धूनी देऊँगी जलाय। सोने के आसन बनवाय के जड़वाय देऊं हीरा लाल॥ पाट पटंबर की गूदड़ी टोपी रतन जड़ाय। केसर सूं धूनी डारती खड़ी रहूंगी हज़ूर॥ दूध कटोरे से प्यावती पंखों से करो थारी ब्यार। दोनों वख़्त दस्तरख़ान करोंगी बनाय॥

यहीं बिरमे रे मेरे साइयां जी। बोले ते दिन राजा भरतरी सुन रानी मेरी बात ।। तेरे द्वारे त्रिया ना रहें गुरु को आवेगी लाज। बहता पानी रमते योगिया दिल में मैला हो जाय।। बैठे राजा बैठे परजा मृगा बैठे उजार। योगी का बासा कुम्हार घर क्या मंदिर क्या मशान।। जिन घर छोड़े रानी आपने उन की ऐसी है रीत। पुत्र कहे भिक्षा डार दे योग अमर हो जाय।। कलि में०।। योगी हो के सैयाँ रम चले मन की पूजी न आश। दूध न भीजा आंचरा। बालक खेला न गोद।। आशा का वृक्ष सब्यौं ना लगा जिन के विरमों में छांह। गोदी मे बालक ना भया जियरा राखों बिलमाय ।। जो बालक को में पालती करती नगरी को राज। यही०।। बोली रानी ते दिन भरतरी सुन रानी मेरी बात। मूरख रानी तू तो बावरी माथे री लिखा भगवान।। बे[illegible] और बेटा नसीब का मांगे से मिलता नाहिं। बीज तो बोया बबूर का आंब कहां से खाय।। रस की क्यारी तुमने बिष बोया मन में क्यों पछिताय ।। बैठी रहो रंग महल में चाबो नागर पान। पूजा क[illegible] दीना नाथ की वोई लगावें बेड़ा पार।। हाथों[illegible] दिया तेरे संग चले वही आवे तेरे काम। समझो[illegible]

योगी ह्वो सैयां जाउगे घर घर मांगोगे भीख ॥ जाय खड़े होंगे काहू नीच के गाली देगो गवाँर। क्षत्री धरम घट जायगा तुम हो राज कुमार॥ समझो०॥ तुमैं गाली से रानी क्या पड़ी हमने साधा है योग॥ मन को मारे तन को वश करे साधे सकल शरीर। दया फारि कफनी करे तिन का नाम फ़क़ीर॥ तुम तो जायो रानी भाग कैं हमने साधा है योग। समझो क्यों ना रानी०॥ बोली रानी ते दिन श्याम दे सुनो राजा महराज। माय बिना कैसा माय का भाई विना कैसी बहिन॥ भैन बिना कैसी सम्मता राजा बिना कैसा न्याव पुत्र बिना कैसा पेखना गोरस बिना कैसा भोग॥ चंद बिना कैसी चाँदनी दीपक बिन कैसी योति। बिना पुरुष कैसी कामिनी कोन लगावे बेड़ा पार यही बिर०॥ चौपाई॥ राजा ग्रह से निकली संग लाज गह्यो हमारी॥ मढी पौढो आसन मारि मैं एजा चेरी तुम्हारी॥ रानी सुख में सब कोई नारि नारि जो दुख में होती। जिन के पिया भये फ़क़ीर संग योगन ह्वो फिरती॥ राजा सुख मत माँगो भीख। खप्पर भर आगे धरोंगी। घर घर मांगोंगी भीख सेवा मैं प्यारी करोंगी॥ रानी कोन किसी के संग

नहीं देह चलेगी। हम लिया योग न माता फेर जनेगी ॥ तजा राज अरु पाट तजीं सोलह से रानी॥ तजा नगर गढ़ द्वीप सुनी गोरख की बानी॥ योगी होके सैयां रम चले मेरा कौन हवाल। सावन आवेगा सैयां रंग भंगा भादों गहर गँभीर ॥ इन्द्र उठे घन घोर के बोले दादुर मोर। जब सुधि आवै मेरे पीव की नैनों से बर्षेगा नीर ॥ यहीं बिरमो मेरे साइयां जी। बोले राजा ते दिन भरतरी सुन रानी मेरि बात ॥ सदा न फूले रानी तोरई सदा न सावन होय॥ सदा न यौवन थिर रहै सदा न जीवे कोय॥ सदा किसीकी ना रहै पीत लगल की बाँह। ढलती फिरती योंहीं जायगी ज्यों तरवर की छाँह ॥ जैसा है मोती ओस का ऐसा खलक़ जहान। देखत का तो झिल मिला ढुलते लगे न बार ॥ क्या तो लङ्कपति ले गये करता गये क्या खोय। हाथ पसारे यों हीं जायँगे जिनके लाख करोर ॥ पानी कासा बुल बुला मत करना अभिमान। पुत्र कहे कलि में० ॥ बोली रानी ते दिन श्याम दे सुनो राजा महराज। योगी होके सैयां रम चला मैं योगिन तेरे साथ ॥ तेरे चले प्रिया ना बने योग भुरा न होय। चलना पैंडु दिन रैन को रहना विकट उजाड़ ॥

जाय उतरेंगे काहू नगर में धूनी देंगे जलाय॥ ओही नगर का जो राजा आवे योगी के पास। देखे सूरत तेरी रंग मगी मन में लावेगा पाप॥तुम को बनावे पटरानियां हम को डारेगा मार। दुबधा में दोऊ गये माया मिली न राम॥मेरी तेरी संगति ना बने सुन रानी मेरी बात। पुत्र कहे भिक्षा डार दे योगी अमर हो जाय॥कलिमें०॥ पटका पकड़ समझावती सुनो राजा महाराज। ज्ञान गुरू का बताय दो नहिं मुद्रा लेउंगी छिनाय॥ कौन गुरू के तुम बालका किन दिया ऐसा ज्ञान। शब्द गुरू के हम बालका गोरख देगये ज्ञान॥ मरियो तेरे गुरू गोरख जी जिन दिया ऐसा ज्ञान। गुरू को गाली त्रिया मत दे वे कर डारें भस्मान्त॥ गुरू गूंगा गुरू बावला गुरू है देवन का देव। गुरू ते चेला अति बड़ा करता गुरून के सेव॥ गुरू बसेंगे काशी में चेला बसेंगे प्रयाग। अपने गुरू को यों झुके जैसे कुआं झुके पनिहार॥ बड़े बड़ाई स्वामी ना करें बड़े बोलें न बोल। हीरा मुंह सों ना कहे लाखन उन का है मोल॥ पुत्र कहे॥ कलिमें०॥ बोली रानी ते दिन श्यामदे सुनो राजा महाराज। योगी होके कैयां जावगो।

चौसर खेलो मेरे साथ ॥ चौसर खेलें रानी क्या। करें बाजी क्या बदि लेउँ । हारों तो प्यारे संग चलौं जीतों जाने न देउँ ॥ ऐसी बाज़ी रानी ना बदें तक लिये दोनों दाव । जो बाज़ी जीतो तुम श्याम दे दश दिन राखो बिरमाय॥ जो बाज़ी जीतें भरतरी तुम्हें लगावें ना साथ । एक पाँसे की बाज़ी बदें दूजा फेंकेंगे नाहिं ॥ चौसर लई है मँगाय के खेले राज कुमार । पाँसा लिये रानी हाथ में सुन पाँसे अरदास ॥ करम को संग मेरा दीजियो पड़ियो सोलह अरु सात । साते बखत सत्ता परो नहिं पड़ी पजड़ियाँ चार॥ पाँसा फेंका रानी श्याम दे परिगये काने तीन। पाँसा पटकि रानी शिर धुने उलटी खाई पछाड़ ॥ पाँसा मैं तुम को जलाय दूं जल के हो जाओ खाक । पाँसे को काहे जलावती करम लगी तेरे आग ॥ कूट कमाया आपना जग को क्या देना दोष। दोहा ॥ राम नाम सुमिरा नहीं हरि सों किया न हेत । वे नर योंही जायँगे ज्यों मूली का खेत ॥ खेत बिगाड़ा है खरतुआ सभी बिगाड़ा है कूर । धरम बिगाड़ा है लालची केसर की हो गई धूर ॥ समझो क्यों नहीं त्रिया।

बावलीजी। पाँसा लिया राजा हाथ में धर भगवान का ध्यान॥ याद किया गोरख नाथ को राखो भेष की लाज॥ पाँसा फेंका राजा भरतरी हरिगये सोलह अरु सात। जीती बाज़ी राजा उठिचले रानी उठि खाई पछाड़॥ पटका पकड़ समझावती सुनो राजा महाराज। महलों में भोजन तैयार है कन्ना जेंलो जेवनार॥ छोटा सा खप्पर निकाल ते इस में लावो भोली माय। बोली रानी ते दिन प्रयाम दे सुनो राजा महराज॥ ओछे गुरू के तुम बालका ओछा लाये भंडार। सोलह सौ थार परोसती खप्पर भरगया नाह॥ कायल भई रानी प्रयाम दे राजे दीनी अशीश। पूरे गुरू के तुम बालका पूरा लाये भंडार॥ पुन कहे भिक्षा डार तो लेजा रमते अतीत। लेके भिक्षा राजा रम चले आसन पड़ी भभूत॥ धौरे मंदिर धौरे बाग़ में बोलन लागे कारे काग़। धन्य घड़ी जामें जन्म लिया धन्य पुरुष तेरे भाग॥ मेरी मेरी कहके रम गये रानी खड़ी रोवै द्वार। साँची बनी काया कोठरी झूठा जग संसार॥ नदी किनारे का रूखड़ा जब तब होय बिनाश॥ मेरी मेरी कह के रमिगये अर्जुन योधा से भीम

पड़ी रही झाड़ खंड में गढ़ कोटा कीसी नीम॥ युग २ जीवे मेरी नागरी प्रजा रहे गुलजार। सुघरा बसे मेरी नागरी चौपड़ लागे बाज़ार॥ बारसे दूनी उजाड़ में मिले गये गोरख नाथ। चेला बनाले बाबा आपना सेवा करैंगे बनाय॥ धूनी तेरी हम करैं संग फिरैं तेरे साथ। बोले बाबा-गोरख नाथ जी सुन बच्चा मेरी बात॥ तुझ को चेला ना करैं तुम हो राज कुमार। पान फूल के भोगिया न सधै तुम से योग॥ पान फूल बाबा सब तजौं सुन गुरु गोरख नाथ। छोड़ा ऊंचे का बैठना छोड़ा भाइयों का साथ॥ योग बुरा जो-हर भला आठ पहर संग्राम। आठ पहर के बीच में जिसे राखै भगवान॥ चुटिया काट चेला लिया कान दीन्हें हैं फूंकि। पीठ ठोक दीन्हीं गोरख नाथ जी योग अमर हो जाय॥ कालि में अमर हो जाइ हो भरतरी जी॥ इति श्री काशीनाथ जी विरचितम् भरतरी गीत समाप्तम्॥

मंगलमस्तु